Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

लिओ स्ट्रॉस का राजनीतिक दर्शन: एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. अनुराग पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर (उ0प्र0)
DOI: https://doi.org/10.65578/kavyasetu.v2.i3.286

सारांशः–
लियो स्ट्रॉस (1899–1973) बीसवीं शताब्दी के प्रमुख राजनीतिक दार्शनिकों में से एक थे, जिन्होंने आधुनिक राजनीतिक चिंतन की आधारभूत मान्यताओं की गहन समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने विशेष रूप से प्रत्यक्षवाद तथा ऐतिहासिकतावाद की आलोचना करते हुए यह प्रतिपादित किया कि राजनीतिक दर्शन का उद्देश्य केवल राजनीतिक तथ्यों का वर्णन करना नहीं, बल्कि न्याय, सद्‌गुण, प्राकृतिक अधिकार तथा श्रेष्ठ शासन व्यवस्था जैसे शाश्वत नैतिक प्रश्नों की विवेचना करना है। स्ट्रॉस ने प्राचीन यूनानी दार्शनिकों, विशेषतः प्लेटो और अरस्तू के विचारों का पुनर्पाठ कर यह स्थापित किया कि शास्त्रीय राजनीतिक दर्शन आज भी समकालीन राजनीतिक एवं नैतिक संकटों के समाधान में प्रासंगिक है। प्रस्तुत अध्ययन में लियो स्ट्रॉस के राजनीतिक दर्शन के मूल तत्त्वों, उनकी प्रमुख अवधारणाओं, आधुनिक उदारवाद एवं आधुनिकता पर उनकी आलोचना तथा समकालीन राजनीतिक विमर्श में उनके योगदान का समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन भारतीय एवं वैश्विक राजनीतिक चिंतन के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।
मुख्य शब्द : प्राचीन दर्शन, आधुनिकताः-

विषयः

लिओ स्ट्रास राजनैतिक दर्शन की महत्ता समाज के व्यापक हित में मानते थे। उनका मानना था कि श्रेष्ठ राजनैतिक व्यवस्था निर्मित करने के मार्ग में दो प्रमुख चुनौती है। पहली प्रत्यक्षवाद दूसरी इतिहासपरता। लिओं स्ट्रास मानते थे कि परम्परागत दार्शनिक, समाज के हित का मार्ग प्रतिपादित करते समय राजनैतिक दर्शन और राजनीति विज्ञान में विभेद नहीं करते थे।

लिओ स्ट्रास ने स्पष्ट किया कि वर्तमान में अच्छे समाज की जो धारणा है उसमें किस प्रकार परिवर्तन आया इसके विवेचन के लिए राजनैतिक दर्शन के इतिहास को समझने की आवश्कता है। जर्मनी की निरंकुशतावादी व्यवस्था ने लिओ स्ट्रास को सर्वाधिकार का विरोधी बना दिया। स्ट्रास 'सार्वभौमिक और सजातीय' राज्य के आलोचक थे। परन्तु वो आधुनिक लोकतंत्र के प्रखर समर्थक थे। " The Three waves of Modernity" में लिओ स्ट्रास ने चिन्ता व्यक्त करते

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हुए स्पष्ट किया कि वर्तमान कालखण्ड की सबसे बड़ी चुनौती आधुनिक चिंतन की इतिहासपरतावाद की समुचित समझ न विकसित कर पाना है।

स्ट्रास ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए लिखा कि उदारवादी लोकतंत्र के समर्थक वह वर्ग भी है जिसे पूर्णतयः आधुनिक नहीं माना जा सकता। परन्तु उसे पूर्व आधुनिक कहा जा सकता है। इस पूर्व आधुनिक की मुख्य विशेषतायें आधुनिक व्यक्तियों को याद दिलाती है कि अधिकार और कर्त्तव्य एक दूसरे के साथ जुड़े हुए है। दूसरा आधुनिक पुरूष/महिला यह याद रखें कि भौतिक सुख/दुःख आत्मा के जीवन पर प्रभाव डालते है। पर उसे समाप्त नहीं कर पाते। साथ ही आधुनिक व्यक्तियों को यह स्मरण रखना चाहिए कि हमेशा उन्हें गलत और सही, शुभ/अशुभ में भेद पता हो। क्योंकि अच्छा जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है।

लिओ स्ट्रास का मानना था कि हमारा कार्य मात्र परंपराओं को पुर्नस्थापित करना नहीं है अपितु परंपराओं को आवश्यक सुधारों के साथ आगे बढ़ाना है। स्ट्रास का कहना था कि हम सभी का प्रयत्न होना चाहिए कि आधुनिक लोकतंत्र की स्वतंत्रता का उपयोग कर हमें प्राचीन श्रेष्ठ पुस्तकों का अध्ययन कर मानवीय श्रेष्ठता को विकसित करना चाहिए।

स्ट्रास का मानना था कि नीत्शे और मार्क्स के विचारों की असफलता से हम यह सीख सकते हैं कि विवेक में भी आंशिक सुधार और परिर्वतन हो सकते हैं। ऐसे आंशिक सुधारों और परिवर्तन से हम समाज को खतरों से बचा सकते हैं। खतरा जैसे राजनीति से आशातीत अपेक्षा स्ट्रास का मानना था कि उदारवादी शिक्षित व्यक्ति को सुधारों के प्रति समर्पित होना चाहिए साथ ही उसे अपने भीतर एक उत्तरदायी नागरिक की बुद्धिमत्ता विकसित करनी चाहिए।

स्ट्रास की पुस्तक "Natural Right and History" स्पष्ट करती है कि हमें अनावश्यक रूप से प्राकृतिक अधिकारों एवं पंरपराओं को खारिज करने से बचना चाहिए। स्ट्रास ने स्पष्ट किया कि वर्तमान सामाजिक विज्ञान और दर्शन प्राकृतिक अधिकारों और परंपराओं को खारिज करने में लगे हुए हैं। स्ट्रास मानते थे कि प्लेटों और सुकरात आदि दार्शनिकों ने जीवन को बेहतर बनाने की बात कहीं। अगर हम जीवन को सुव्यवस्थित और बेहतर बनाने का प्रत्यत्न छोड़ देगें, तो आत्मा को विकसित कर सांसारिक बन्धनों के पार जाने की कोशिशों को चोट पहुँचेगी।

लिओ स्ट्रास ने तथ्य और मूल्य पर भी अपने विचार रखें। मैक्सबेबर ने उनके विचारों को स्पष्टता से सामने रखा। लिओ स्ट्रास का स्पष्ट मत था कि नैतिक विश्लेषण सामाजिक विज्ञान का अविभाजनीय तत्त्व है। नैतिक मानदण्डों को किनारे करना सामाजिक विज्ञान के विषयों की आत्मा को मारना है। नैतिक विश्लेषण को किनारे करना राजनैतिक दर्शन को भी कुंद करता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्ट्रास स्पष्ट करता है कि हम सभी राजनीति के विद्यार्थियों को ''सभी विषयों को उनकी समग्रता में देखना चाहिए। उनको वैसे ही देखना चाहिए जैसी वो है।'' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों को अपने आप को इस भ्रम से मुक्त करना चाहिए कि ''नैतिक कथन तथ्यात्मक कथन नहीं हो सकता।''

स्ट्रास ने चर्चिल और वर्क दोनों की प्रशंसा की। स्ट्रास ने बर्क द्वारा फ्रेंच क्राँति की आलोचना को उचित माना। स्ट्रास ने कहा कि '' फ्रेंच क्राँति के सिद्धान्तकारों ने जो अतिवादी मानवतावाद पर जोर दिया वह वास्तव में पशुता की तरफ जाने वाला मार्ग है।

लिओ स्ट्रास ने कहा कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से शरीर और आत्मा में विभेद करता है। प्राकृतिक रूप से यह विश्वास भी है कि आत्मा शरीर से ऊपर है। आत्मा की यह श्रेष्ठता मनुष्य को अपना जीवन विचारशील होकर कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। स्ट्रास का मानना था कि अच्छा जीवन सुव्यवस्थित और स्वस्थ आत्मा पर निर्भर करता है। स्ट्रास मानते थे कि अच्छे जीवन का तात्पर्य सुखों की उपलब्धता से नहीं अपितु गुणात्मकता से युक्त होना है। स्ट्रास का महत्त्व इस तथ्य में है कि उन्होंने प्राचीन राजनैतिक दर्शन को पुनः महत्त्वपूर्ण बनाया। और प्राचीन दर्शन को सर्वांगीण जीवन का साधन मानते हुये सत्य की खोज करने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कहा। अपना ध्यान प्राचीन दर्शन पर केन्द्रित करने के बाद भी स्ट्रास ने विज्ञान परकता को भी खारिज नहीं किया।

1941 में एक सेमिनार में बोलते हुए स्ट्रास ने कहा कि सभ्यता के दो प्रमुख स्तम्भ है। पहला उन्होंने नैतिकता को माना और दूसरा विज्ञान को। उन्होंने स्पष्ट किया कि विज्ञान नैतिकता के बिना कुटिलता में परिवर्तित हो जायेगा जो कि वैज्ञानिक प्रयासों के आधार को ही समाप्त कर देगा। वहीं नैतिकता विज्ञान के अभाव में अंधविश्वास बन जाएगी। साथ ही वह क्रूरता को भी जन्म देगी।

लिओ स्ट्रास का **राजनितिक** दर्शन में योगदान अतुलनीय है। डेविट ईस्टन द्वारा व्यवहारवाद और उत्तर व्यवहारवाद के माध्यम से राजनीति विज्ञान को वैज्ञानिक बनाने का जो प्रत्यत्न किया वह राजनीतिक दर्शन की आत्मा को मार रहा था। स्ट्रास ने विज्ञानवाद के नाम पर राजनीति विज्ञान में हो रहे परिवर्तनों पर प्रश्न उठाया। उनके दर्शन का संक्षेप में अगर व्याख्या की जाए तो मुख्यतः उन्होंने आधुनिक राजनैतिक दर्शन जो मैकियाविली से आरम्भ हुआ था, और ह्यब्स एवं रूसों को समाहित किए हुए वर्तमान तक आया उस पर प्रश्न उठाया। उनका कहना था कि आधुनिक **राजनितिक** दर्शन ने मानवीय श्रेष्ठता का प्रयत्न करना छोड़ दिया। वह निम्न भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति करने का प्रयत्न करने लगा। उन्होंने आरोप लगाया कि यह मूल्य विहीन सामाजिक विज्ञान बनाने का प्रयत्न है।

लिओ स्ट्रास प्राचीन राजनैतिक दर्शन को पुर्नस्थापित करने का प्रयत्न करते थे। उनका मानना था कि आधुनिक राजनैतिक दर्शन को प्लेटो एवं सुकरता को अपना आदर्श मानना

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चाहिए। जिन्होंने श्रेष्ठ मानव जीवन की प्राप्ति के लिए व्यवस्था बनाने पर जोर दिया। प्लेटो और अरस्तु ने मानवीय जीवन को गुणवान बनाने का प्रयत्न किया। ठीक उसी तरह आधुनिक राजनैतिक दर्शन का कार्य भी समाज और व्यक्ति में गुणों का विकास करना है, एवं सत्य की खोज करनी है। लिओ स्ट्रास का आधुनिक **राजनितिक** दर्शन को महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने स्पष्ट किया कि विगत शताब्दियों में जो दार्शनिक हुए उन्होंने राज्य, समाज और व्यक्ति का भला सोचा। उन्होंने अपने नकारात्मक विचारों को भी अपनी लेखनी के माध्यम से अपनी पुस्तक की पंक्तियों के बीच छुपा दिया। आधुनिकता पर कड़ा प्रहार करने हुए स्ट्रास ने कहा कि आधुनिकता की दो लहरें है। पहली लहर वैज्ञानिक आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने पर जोर देती है। अर्थात् उदारवाद पर केंन्द्रित है। दूसरी आधुनिकता की लहर क्रॉंतिकारी विचारों जैसे साम्यवाद पर बल देती है। उपरोक्त का परिणाम हुआ कि नैतिकता का क्षरण हुआ।

स्ट्रास ने दर्शन और धार्मिक विश्वास पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया और इन दोनों को आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता के दो स्तम्भ बताया। लिओ स्ट्रास उदारवादी लोकतंत्र के समर्थक थे। वो लोकतंत्र को विवेक और शुभ गुणों से युक्त बनाना चाहते थे जिससे एक मजबूत समाज की स्थापना हो।

निष्कर्षः—

लिओ स्ट्रास आधुनिक राजनैतिक दर्शन को निम्न भौतिक सुखों की प्राप्ति के प्रयत्न के विरोधी थे। उनका मानना था कि राजनैतिक दर्शन को प्लेटो, सुकरात और अरस्तु से प्रकाश प्राप्त कर एक बेहतर व्यक्ति और समाज की स्थापना का प्रयत्न करना चाहिए। उनका मानना था कि नैतिकता और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों को आधुनिकता के नाम पर अलग—अलग देखने का प्रयास बंद करना चाहिए।

संदर्भ :—

1. स्ट्रॉस, लियो. (1953). नेचुरल राइट एंड हिस्ट्री (Natural Right and History). शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
2. स्ट्रॉस, लियो. (1959). व्हाट इज़ पॉलिटिकल फिलॉसफी? एंड अदर स्टडीज़ (What Is Political Philosophy? and Other Studies). शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
3. स्ट्रॉस, लियो. (1989). एन इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल फिलॉसफी: टेन एसेज़ (An Introduction to Political Philosophy: Ten Essays). संपादक: हिलेल गिल्डिन। डेट्रॉइट: वेन स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. स्ट्रॉस, लियो एवं क्रॉप्सी, जोसेफ (सम्पा.). (1987). हिस्ट्री ऑफ़ पॉलिटिकल फिलॉसफी (तृतीय संस्करण). शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
5. ज़कर्ट, कैथरीन एच. एवं ज़कर्ट, माइकल पी. (2006). द ट्रुथ अबाउट लियो स्ट्रॉस: पॉलिटिकल फिलॉसफी एंड अमेरिकन डेमोक्रेसी। शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।